11

समकालीन कला एवं कलाकार

पिछले अध्याय में हम कंपनी चित्र-शैली के बारे में जान चुके हैं। प्रस्तुत पाठ में हम समकालीन कला एवं कलाकारों के बारे में जानेंगे। बीसवीं सदी एवं उसके बाद की समकालीन भारतीय कला में बहुत वैविध्य है। इस समय में कला राज दरबारों एवं शाही परिवारों से निकलकर आम आदमी के जीवन में प्रवेश कर रही थी जो सीधे तौर पर भारत की प्राचीन संस्कृति से प्रेरित थे।

बीसवीं सदी ईसवी के आरंभ में कुछ भारतीय चित्रकारों ने नए विषयों पर चित्र बनाए जो प्राचीन भारतीय संस्कृति से प्रेरित थे। ऐसे ही वातावरण में त्रावणकोर राज्य से राजा रवि वर्मा जैसे महान चित्रकार का उदय हुआ। आज तक उनके बनाए चित्रों के प्रति लोगों का आकर्षण बना हुआ है। उन्होंने पुराने महाकाव्यों; जैसे-रामायण, महाभारत पर आधारित चित्र बनाए। ये चित्र पश्चात्य चित्रकला से भी प्रभावति थे। चित्रकला के प्रति उनकी लगन उन्हें यूरोप ले गई जहाँ उन्होंने तेलरंगों से चित्रकारी सीखी। आज भी उनके बनाए हुए देवी-देवताओं के चित्र लोगों को मोहित करते हैं।

कुछ साहसी चित्रकारों के आने से भारतीय चित्रकला के परिदृश्य का चेहरा ही बदल गया। इनमें पश्चिम बंगाल के अवनींद्रनाथ टैगोर एवं नंदलाल बोस प्रमुख थे, जिन्होंने अपनी निजी शैली विकसित कर 'बंगाल स्कूल' की स्थापना की। इसका अनुसरण कुछ अन्य चित्रकारों; जैसे- शारदा उकील, चुगताई और असित हालदार आदि ने किया। ऐसे समय में जबकि 'बंगाल स्कूल' देश में अन्य भागों में अपना प्रभाव फैला रहा था, तभी हंगरी में जन्मी फ्रांस में कलाशिक्षा पायी भारतीय चित्रकार अमृता शेरगिल ने कलाजगत में कदम रखा। रवीन्द्रनाथ टैगोर अपनी निजी कला-शैली का विकास कर रहे थे। जामिनी राय कालीघाट पर आधारित आधुनिक चित्रण-शैली में चित्र बना रहे थे। इसके बाद 1943 ईसवी में कोलकाता में भारतीय आधुनिक चित्रकारों के पहले समूह, जिसे 'कलकत्ता ग्रुप' कहा गया, की स्थापना हुई। इस समूह के प्रमुख सदस्यों में मूर्तिकार प्रदोषदास गुप्ता एवं चित्रकार पारितोष सेन, गोपाल घोष, निरोडे मजूमदार एवं जैनुल आबदीन थे।

प्रगतिशील चित्रकारों के एक अन्य समूह ने भी इस समय में अपनी कला-प्रतिभा का प्रदर्शन किया। भूदृश्य, प्रकृति एवं छविचित्र अथवा व्यक्तिचित्र आदि इन चित्रकारों के प्रिय विषय थे। इन चित्रकारों ने आने वाले समय में भारतीय चित्रकला को नया अर्थ दिया। 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट

ग्रुप' में अनेक प्रसिद्ध चित्रकार, जैसे- एम. एफ. हुसैन, सैयद हैदर रज़ा, फ्रांसिस न्यूटनद सूजा, हरिअम्बा दास गाडे, कृष्णाजी हावलाजी आरा आदि इसके सदस्य थे, जिन्होंने अपनी पहली सामूहिक प्रदर्शनी 1947 में आयोजित की। लक्ष्मण पाई, कैथी लैंगेजर, कृष्ण खन्ना, सदानन्द बाकरे, डी. जी. कुलकर्णी, ए. ए. अमेलकर, तैयब मेहता केकू गांधी एवं मनीष डे आदि ने इस समूह में बाद में प्रवेश किया। दक्षिण भारत में के. सी. एस. पणिक्कर, एवी श्रीनिवासुलु, डी. पी. रॉय चौधरी के शिष्यों ने स्वयं को स्थापित किया।

आज अनेक भारतीय चित्रकार महान कलाकृतियों का सृजन कर रहे हैं तथा उन्हें भारत एवं विदेशों में प्रदर्शित कर रहे हैं। अधिकांश भारतीय चित्रों को विदेशी ग्राहक खरीद रहे हैं। भारतीय कला का अनूठापन आज भी इसकी समृद्ध विरासत में निहित है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- भारतीय समकालीन कला के उदभव एवं विकास के बारे में लिख सकेंगे;
- पठित समकालीन कलाकारों की कलाकृतियों को पहचान कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- पठित चित्रों के शीर्षक लिख सकेंगे;
- पठित कलाकारों के योगदान के बारे में लिख सकेंगे।

11.1 राजा रवि वर्मा

आज अनेक कलाकार अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन देश-विदेश में कर रहे हैं। अधिकतर भारतीय चित्र-कृतियों को विदेश में खरीदार मिले हैं। आज भी भारतीय चित्रकारी का वैशिष्ट्य इस बात में है कि वह समृद्ध भारतीय संसकृति पर आधारित है।

बुनियादी सूचना

राजा रवि वर्मा का जन्म 29 अप्रैल 1848 को दक्षिण भारतीय राज्य केरल के एक छोटे से नगर किलिमनूर के शाही महल में हुआ था। पांच वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने अपने घर की दीवारों को पशुओं और दैनिक जीवन के कार्यकलापों विषयक चित्रों से भर दिया था। अपनी शिक्षा में इन आरंभिक वर्षों में ही उन्हें चित्रकारी में अनेक माध्यमों एवं तकनीकों को सीखने एवं उनमें कार्य करने के अवसर प्राप्त हुए। बाद के वर्षों में उन्हेंने अपना समय मैसूर, बड़ौदा एवं देश के अन्य भागों में बिताया, जिससे उन्हें अपनी कला-प्रतिभा चमकाने और एक परिपूर्ण चित्रकार के रूप में प्रतिष्ठित होने में सहायता मिली। उनकी कला-प्रतिभा को ब्रिटिश सम्राट एवं अनेक भारतीय महाराजाओं ने पहचाना और सराहा। राजा रवि वर्मा अपनी सफलता का श्रेय अपने विधिवत प्रशिक्षण को देते थे, जो कि उन्हें पहले तंजावुर की पारंपरिक कला में और बाद मे यूरोपीय कला में मिला।

रवि वर्मा तैलरंग की मोटी परत से उभर कर चमकदार आभूषण, जरी के काम के टैक्चर एवं शरीर की त्वचा की मंद एवं कोमल छटाओं का सृजन करते थे। उन्होंने चित्रण हेतु संस्कृति, साहित्य से भावपूर्ण एवं हृदय को छू लेने वाली कहानियाँ एवं घटनाएँ बहुत ही बुद्धिमता से चुनी। उनके मिथकीय पात्रों के चित्रण ने भारतीय जनमानस की कल्पना को छू लिया। उनके बनाए चित्र आज भी भारत में लोकप्रिय हैं। वे अपने यथार्थ चित्रण एवं कोमल रंग छटाओं में प्रयोग हेतु जाने जाते हैं। छविचित्र आधारित संयोजनों के अतिरिक्त उन्होंने भारतीय मिथकों एवं किंवदन्तियों पर आधारित चित्र; जैसे- 'नल दमयन्ती', 'शान्तनु और गंगा', 'राधा एवं माधव', 'अर्जुन और सुभद्रा', 'विश्वामित्र एवं मेनका', 'सीता स्वयंवर', 'युवा भारत एवं सिंह समूह', 'श्री कृष्णजन्म', 'कीचक एवं सैरन्ध्री' आदि को अपने कौशल से एक नया रूप प्रदान किया। उनके चित्रों ने विश्व में कला-प्रेमियों का ध्यान भारतीय कला की ओर खींचा। 2 अक्टूबर 1906 को राजा रवि वर्मा ने अपने जीवन की अंतिम सांस ली।

चित्र 11.1: सुभद्रा हरण

शीर्षक	:	**सुभद्राहरण**
चित्रकार	:	राजा रवि वर्मा
काल	:	1890 ईसवी
माध्यम	:	कैनवास पर तैलरंग
माप	:	330" × 59"
संग्रह	:	महाराजा फतेह सिंह संग्रहालय, वड़ोदरा, गुजरात

सामान्य विवरण

सुभद्राहरण नामक इस चित्र में अर्जुन संन्यासी के वेश में सुभद्रा के साथ में खड़े हैं। यह चित्र महाभारत से लिए गए कथानक पर आधारित है। सुभद्रा वसुदेव और रोहिणी की इकलौती पुत्री थी। संन्यासी वेश में अर्जुन, सुभद्रा को गले लगाना चाह रहा है और सुभद्रा लोकलाज के कारण इससे बचने की कोशिश कर रही है। चित्र में राजा रवि वर्मा ने तैलरंग की मोटी परत की सहायता से चमकदार एवं उभरे हुए आभूषण, जरी के काम का टैक्सचर तथा त्वचा के रंग की मंद छटाएँ चित्रित की हैं। उन्होंने बड़ी होशियारी से इस क्षण को चतुराई से चित्रित करते हुए एक ओर जंगल, दूसरी ओर संन्यासी के आसन को पृष्ठभूमि में दर्शाया है।

संन्यासी का आसन दो पशुचर्म से सुसज्जित है- एक बैठने हेतु एवं दूसरा छाया देने के लिए संपूर्ण चित्र में एक ऐसी समरसता है, जिसने इसे एक सामान्य चित्र-संयोजन से यादगार कलाकृति बना दिया है।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. राजा रवि वर्मा का जन्म कहाँ हुआ?
2. राजा रवि वर्मा अपनी सफलता का श्रेय किसे देते थे?
3. 'सुभद्राहरण' किस महाकाव्य पर आधारित है?
4. 'सुभद्राहरण' में अर्जुन को किस वेश में दर्शाया गया है?

11.2 अवनीन्द्रनाथ टैगोर

आइए, अब एक अन्य समकालीन कलाकार अवनीन्द्रनाथ टैगोर के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

बंगाल की समकालीन भारतीय चित्रकला में अवनीन्द्रनाथ का योगदान अति महत्वपूर्ण है। उनका जन्म 7 अगस्त, 1871 में कोलकाता के जोड़ासंको स्थित टैगोर के पारिवारिक घर में हुआ था। उनका लालन-पालन एक सृजनशील परिवार के विचारशील वातावरण में हुआ था। उनकी शिक्षा

कलकत्ता के संस्कृत महाविद्यालय में हुई, परन्तु उन्होंने चित्रकला की शिक्षा ब्रिटिश एवं इटालियन शिक्षकों से निजी तौर पर ली। ई.बी. हैवेल ने उन्हें यूरोपीय प्रभाव से निकालने में सहायता की और उनका ध्यान मुग़ल एवं राजपूत शैलियों की ओर खींचा। उनके द्वारा बाद में बनाए चित्रों में यह प्रभाव परिलक्षित होते हैं। अवनीन्द्रनाथ के चित्रों की प्रदर्शनी 1913 में लंदन और पेरिस में आयोजित की गई। इसके बाद 1919 में जापान में भी एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उनके बनाए 500 से भी अधिक चित्र जोड़ासँको, कोलकाता की रवीन्द्र भारती सोसायटी के संग्रह में हैं। उनकी बनाई कलाकृतियों को राष्ट्रीय कला धरोहर घोषित किया गया है।

भारतीय कला को समृद्ध करने की अवनीन्द्रनाथ की आंतरिक इच्छा को स्वामी विवेकानन्द के साथ जापान से भारत आए जापानी चित्रकार एवं कला विवेचक ओकाकुरा ने भी प्रेरित किया। ओकाकुरा का विश्वास था कि किसी राष्ट्र की आत्मा उसकी कला में व्यक्त होती है। उनकी नज़र में यही बात पूरे एशिया महाद्वीप को एक सूत्र में बाँधती है। बाद में अवनीन्द्रनाथ ने दो अन्य जापानी कलाकारों योकोयामा एवं हिशीदा के मार्गदर्शन में जापानी कला का अध्ययन किया। उनके बने चित्रों– 'दीवाली' एवं 'द सिद्धास ऑफ द अपर एयर' में जापानी प्रभाव साफ़ दिखाई देता है।

कोलकाता के 'गर्वनमेंट स्कूल ऑफ़ आर्टस एण्ड क्राफ्टस' में अवनीन्द्रनाथ कार्यकाल के दौरान कई बदालाव आए। उन्होंने विद्यालय की दीवारों पर चित्रित यूरोपीय चित्रों को हटवा कर उनके स्थान पर मुग़ल एवं राजपूत शैली के चित्र लगवाए। उन्होंने एक नया ललित कला संकाय आरंभ कराया और वहाँ भारत-भर के अनेक प्रसिद्ध कलाकारों को आमंत्रित किया। इस प्रकार उन्होंने अपने विद्यार्थियों को विभिन्न कलाकारों से मिलने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने सभी विद्यार्थियों के लिए स्टैन्सिल कटिंग एवं ओरीगामी जैसे विषय पढ़ना अनिवार्य कर दिया।

चत्र 11.2: जर्नीस एण्ड

1907 में उन्होंने 'इंडियन सोसायटी ऑफ़ ओरीएण्टल आर्टस' की स्थापना की तथा एक विशिष्ट चित्रण-शैली का विकास किया जो 'बंगाल स्कूल' के नाम से जानी जाती है। इस स्कूल ने बंगाल के पुनर्जागरण आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके मार्गदर्शन में चित्रकारों की एक नई पीढ़ी तैयार हुई, जिसमें नंदलाल बोस, असित हालदार, एस. एन. गुप्ता एवं अन्य शामिल थे। उनके बनाए कुछ प्रसिद्ध चित्र है- जर्नीस एण्ड', 'भारतमाता', एवं 'द पासिंग ऑफ़ शाहजहाँ' आदि। अवनीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय आधुनिक कला के पितामह कहे जाते हैं। उनका स्वर्गवास 1951 में हुआ।

शीर्षक : **जर्नीस एण्ड**

माध्यम : जलरंग, वाश तकनीक

चित्रकार : अवनीन्द्रनाथ टैगोर

काल : 1913 ईसवी

संग्रह : नेशनल गैलरी ऑफ़ मार्डन आर्ट, नई दिल्ली

माप : 21 × 15 से.मी.

सामान्य विवरण

अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय टेंपरा तकनीक और जापानी जलरंग पद्धति को मिलाकर एक नई तकनीक को जन्म दिया जिसे वाश तकनीक कहा जाता है। उन्होंने एक रहस्मयी चित्रण-शैली भी विकसित की, जिसमें मंद प्रकाश वाली पृष्ठभूमि मे लम्बोतरी व लयात्मक आकृतियाँ चित्रित की जाती हैं।

प्रस्तुत चित्र में अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने एक मरते हुए ऊँट की जीवनयात्रा के अंत को दर्शाने हेतु रूपक के तौर पर चित्रित किया है। संभवत: यहाँ जीवन की तुलना एक आदमी की यात्रा से की गई है। दृश्य संध्याकाल की हल्की धूप में नहाया हुआ है। ऊँट की गिरती हुई आकृति गहन अवसाद में है, जिसके द्वारा कलाकार जीवन के क्रूर अंतिम क्षणों की वास्तविकता को दर्शाना चाहता है। ऊंट के अगले पैर, उसकी ज़मीन को छूती गर्दन उसकी अभिव्यजंनात्मक मुद्रा को और अधिक प्रभावी बना रही हैं। चित्रकार ने लाल, पीली एवं धूसर रंग-छटाओं का प्रयोग कर इस चित्र संयोजन को बहुत ही संवेदनशीलता से चित्रित किया है। इस चित्र के चित्रण में मुगल एवं राजपूत प्रभाव स्पष्ट है।

पाठगत प्रश्न 11.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकरा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अवनीन्द्रनाथ टैगोर के जन्मस्थान का नाम है-

   (i) वीरभूमि (कोलकाता) (ii) जेरासांको, (कोलकाता)

   (iii) पुरी (ओडिसा) (iv) कुल्लू (हिमाचल प्रदेश)

2. 'सुभद्राहरण' चित्र का माध्यम है–

(i) पेस्टल रंग (ii) पेंसिल का रंग

(iii) जलरंग (iv) इनमें से कोई नहीं

11.3 जामिनी रॉय

आइए, अब एक और प्रसिद्ध समकालीन कलाकार जामिनी रॉय के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

जामिनी रॉय, 20वीं सदी के महान चित्रकारों में से एक थे। उनका जन्म 1887 में बंगाल के बाकुरा ज़िले में बेल्लातोर गाँव के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। सोलह वर्ष आयु में उन्हें कोलकाता में गर्वमेंट स्कूल ऑफ आर्टस में पढ़ने के लिए भेजा गया। उन्हें शीघ्र ही यह अहसास हो गया था कि उन्हें अपनी संस्कृति से ही प्रेरणा लेनी चाहिए। अत: उन्होंने जीवंत ग्रामीण लोक एवं आदिवासी कला की ओर रुचि दिखाई। वे सबसे ज्यादा बाकुरा के मिट्टी के खिलौनों एवं कालीघाट पटचित्रों से प्रभावित हुए।

उन्होंने मिट्टी के रंग तैयार किए, उन्हें इमली के गोंद में या अण्डे की सफ़ेदी में मिलाकर प्रयोग किया। जामिनी रॉय ने पारंपरिक टेंपरा तकनीक का प्रयोग किया। कैनवास तैयार करने हेतु वे गाय के गोबर का प्रयोग करते थे। उनका बुनियादी लक्ष्य पुरानी पीढ़ी के लोगों के जीवन में निहित सादगी रेखांकित करना था। भारतीय कला को अपनी निजी पहचान देने एवं समाज के अधिकतम लोगों तक कला को पहुँचाने के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। जामिनी रॉय के बनाए चित्र 'संथाल ढोल वादक', 'लोहार', 'कृष्ण–बलराम' एवं स्त्रीचित्र, जैसे– 'राधा', 'गोपियाँ', 'पुजारिन', 'बिल्ली', 'बाघ पर सवार रानी', 'माँ और बच्चा' अत्यंत लोकप्रिय हुए।

उनके चित्र अन्तरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किए गए हैं तथा विश्व के अनेक निजी एवं सार्वजनिक संग्रहों में संग्रहीत हैं, जिनमें लंदन का विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूज़ियम प्रमुख है। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग कोलकाता में कार्य करते हुए व्यतीत किया। 1934 में उन्हें अखिल भारतीय प्रदर्शनी में वायसराय गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। 1954 में भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 85 वर्ष की आयु में उनका निधन 1972 में कोलकाता में हुआ।

शीर्षक	:	**मदर एण्ड चाइल्ड**
माध्यम	:	केनवास पर टेंपरा
चित्रकार	:	जामिनी रॉय
काल	:	1940 ईसवी
संग्रह	:	नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली
माप	:	46.5 × 116.5 से. मी.

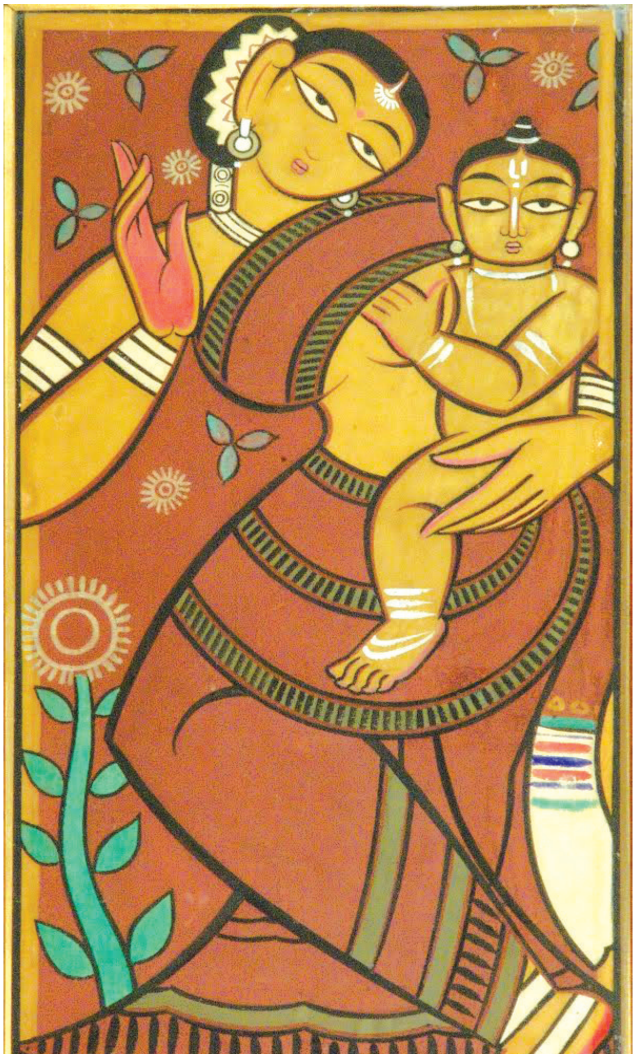

चित्र 11.3: मदर एण्ड चाइल्ड

सामान्य विवरण

जामिनी राय ने अपनी निजी चित्रण-शैली विकसित की जो बंगाल की लोककला पर आधारित थी। वे अपने लिए मिट्टी के रंग स्वयं ही तैयार करते थे। सलेटी रंग के लिए वे नदी की गाद, लाल रंग के लिए सिन्दूर तथा सफ़ेद रंग के लिए चूने का प्रयोग करते थे। काला रंग वे काजल से तैयार कर प्रयोग में लाते थे। उनके चित्रों में रेखाओं का कम-से-कम प्रयोग, रेखांकन में अति सादगी तथा संयोजन ठोस है।

उनके चित्रों में ग्राफिक क्वालिटी है और वे बहुत दिलचस्प हैं। उनमें आधुनिकता तथा परंपरा का एक लुभावना संयोजन है। गहरी मोटी बाह्य रेखाएँ, मछली के आकार की बड़ी-बड़ी आँखें, छोटा मुँह और नाक उनके चित्रों की अनूठी विशेषताएँ हैं। यह चित्र कैनवास पर टेंपरा तकनीक से बनाया गया है। इसमें माँ की सुडौल आकृति है। वह बाएँ हाथों में बच्चे को थामे चित्र के मध्य में बनाई गई है।

आकृति पूर्णतः सन्तुलित है, दाएँ हाथ में अल्ता का लाल रंग लगा है तथा एक पैर तल पर रखा है। बच्चे के हाथ, पैर एवं माथे पर सफेद धारियों से सज्जा की गई है।

पाठगत प्रश्न 11.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. जामिनी रॉय के जन्म स्थान का नाम .... है।
2. जामिनी रॉय ने .... पारंपरिक तकनीक का उपयोग किया।
3. जामिनी रॉय की चित्रकारी का माध्यम .... है।

क्रियाकलाप

समकालीन कलाकारों और कलाकृति के कुछ चित्र एकत्र करें। अब कलाकारों और उनके कार्य के चित्र चिपकाएँ। उसके बाद रंग के उपयोग के संदर्भ में उनके कार्यों में अंतर लिखिए।

कलाकार	काम	अंतर

11.4 अमृता शेरगिल

बुनियादी सूचना

भारत की प्रसिद्ध चित्रकार अमृता शेरगिल का जन्म 30 जनवरी 1913 को हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में हुआ।

उनकी माँ हंगरी की एक मशहूर गायिका थी। अमृता शेरगिल की आत्मकथा के सामने आने के बाद ज्ञात हुआ है कि उनका बचपन हंगरी के एक गाँव में बीता। 1921 में उनका परिवार हंगरी छोड़कर हिमाचल के एक सुंदर पर्वतीय शहर शिमला में आ बसा। शिमला में निवास के दौरान अमृता शेरगिल की रुचि चित्रकला की ओर जागृत हो गई और उन्होंने यहाँ शिमला में रह रहे एक इटालियन मूर्तिकार से चित्रकला की शिक्षा लेना आरंभ किया। इस दौरान उन्हें अनेक इटालियन चित्रकारों द्वारा बनाए चित्र देखने को मिले। इसके उपरांत उन्होंने पेरिस में चित्रकला की शिक्षा लूसिएँ सिमोन के मार्गदर्शन में प्राप्त की। उस समय उन पर यूरोप के चित्रकारों; जैसे- पॉल सेजॉन एवं पॅल गॉगिन का गहरा प्रभाव पड़ा। उनके बनाए चित्रों में पश्चिमी चित्रण-शैली का जबरदस्त प्रभाव झलकता है।

1934 में अमृता शेरगिल पुनः भारत लौटीं और उसके बाद भारतीय कला-परंपरा में उनकी कभी खत्म न होने वाले कलायात्रा आरंभ हुई। यहाँ वे मुग़ल लघुचित्रों एवं अजन्ता के चित्रों से प्रभावित हुईं। उनके बनाए चित्रों में पश्चिमी चित्रण मानसिकता भी परिलक्षित होती है। उनके बनाए चित्रों में रंगों के प्रति उनकी गहरी संवेदना एवं आवेगों की तीव्रता के दर्शन होते हैं। चित्रों में भारतीय विषय पर उनकी पकड़ और गहरी समझ सामने आती है।

भारत सरकार ने अमृता शेरगिल के बनाए चित्रों को राष्ट्रीय कला निधि घोषित किया है। उनके बनाए अधिकांश चित्र गैलरी ऑफ़ मॉर्डन आर्ट, नई दिल्ली में संगृहीत हैं। 'फल बेचने वाला', 'तीन लड़कियों का समूह', 'पहाड़ी औरत', 'स्नानरत औरत', एवं 'निद्रा' उनके बनाए कुछ लोकप्रिय चित्र हैं।

अमृता का विवाह उनके एक हंगरियन रिश्तेदार डॉ. विक्टर एगन के साथ 1938 में हुआ था। विवाह के उपरांत वे अपने पति से साथ उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में अपने पैतृक घर में रहने चली गई। बाद में पति-पत्नी लाहौर चले गए। 28 वर्ष की आयु में सन 1941 में अमृता शेरगिल का देहावसान हो गया।

चित्र 11.4: दुल्हन का श्रृंगार

शीर्षक	:	**दुल्हन का श्रृंगार**
माध्यम	:	कैनवास पर तैलरंग
चित्रकार	:	अमृता शेरगिल
काल	:	1937 ईसवी
संग्रह	:	नेशन गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट, नई दिल्ली
माप	:	144.5 × 86 सेमी

सामान्य विवरण

यद्यपि अमृता शेरगिल के बनाए चित्रों में बहुत विविधता है, परन्तु स्त्री चरित्रों में उनकी विशेष रुचि थी। उनका सदैव ही यह उद्देश्य रहा कि उनके बनाए चित्र आत्मा को छू सकें। उनके बनाए चित्रों में नारी आकृतियाँ अवसादपूर्ण एवं शांत और दबी-कुचली होने की भावना से भरी हुई हैं। 'दुल्हन का शृंगार' नामक इस चित्र-संयोजना में पाँच नारी आकृतियाँ एवं दो मिट्टी के बर्तन चित्रित किए गए हैं। दुल्हन एवं दासियों के शरीर का गठन विरोधाभासी रंग-संयोजन से किया गया है।

हाथों की मुद्राओं से चित्र में एक लयात्मकता उत्पन्न हो गई है। एक दासी दुल्हन के बाल सँवार रही है तथा दूसरी हाथ में प्याला लिए है। दुल्हन की हथेलियाँ लाल रंग से रंगी गई हैं। दासी द्वारा पहना हुआ गोल बिंदु पैटर्न से सजा ब्लाउज़ इस चित्र का अनुठा हिस्सा है। इस चित्र में लाल, गुलाबी, हरा, सफ़ेद, पीला, धूसर एवं बैगनी रंग प्रयुक्त किया गया है। इससे चित्र में संतुलन एवं समरसता के दर्शन होते हैं।

इस चित्र पर अजन्ता से मिले चित्रों एवं राजपूत चित्रों का प्रभाव परिलक्षित होता है। यहाँ पर यूरोपियन तकनीक को अजन्ता शैली से मिलाकर चित्रांकन किया गया है। इस चित्र पर चित्रकार पॉल गॉगिन के प्रसिद्ध चित्र 'ताहितियन वूमन' का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 11.4

1. अमृता शेरगिल के जन्मस्थान का क्या नाम है?
2. अमृता शेरगिल का बचपन कहाँ बीता?
3. अमृता शेरगिल के बनाए तीन प्रसिद्ध चित्रों के नाम लिखिए।
4. 'दुल्हन का शृंगार' चित्र का माध्यम क्या है?

11.5 एम. एफ. हुसैन

एम.एफ. हुसैन प्रसिद्ध समकालीन चित्रकारों में से एक हैं। कला के क्षेत्र में उनके योगदान के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

मकबूल फिदा हुसैन का जन्म 17 सितम्बर 1915 को महाराष्ट्र के पण्ढरपुर में हुआ था। राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय- दोनों ही स्तर पर वे भारत के बहुत लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध चित्रकार थे।

हुसैन सन् 1935 में मुम्बई चले गए और वहाँ सर जे. जे. स्कूल ऑफ़ आर्टस में दाखिला ले लिया। उन्होंने चित्रकार के रूप में अपना जीवन सिनेमा होर्डिंग पेंटर के रूप में आरंभ किया। 1940

तक आते-आते उनके बनाए चित्रों को प्रतिष्ठा मिलने लगी। 1947 में वे 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' में सम्मिलित हो गए।

हुसैन ने कई विषयों पर चित्र शृंखलाएँ बनाईं। इनमें ब्रिटिश राज, अनेक बड़े शहर; जैसे- कोलकाता, बनारस, रोम, बीजिंग, महाकाव्यों पर, जैसे- महाभारत एवं रामायण; मदर टेरेसा पर एक पूरी शृंखला सम्मिलित हैं। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। जीवन के अन्तिम वर्षों में उन्होंने फिल्में बनाई एवं निर्देशित की। उनकी बनाई फिल्मों में 'गजगामनी' और 'ए टेल ऑफ थ्री सिटीज' शामिल हैं। उनकी बनाई फिल्म 'थ्रु द आई ऑफ़ ए पेन्टर' बर्लिन फिल्म समारोह में प्रदर्शित की गई। उसे 'गोल्ड बिअर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

9 जून, 2011 को लंदन में दिल का दौरा पड़ने से उनका देहावसान हुआ।

चित्र 11.5: नाद स्वरम् गणेश्यम्

शीर्षक	:	**नाद स्वरम् गणेश्यम्**
माध्यम	:	केनवास पर एक्रायलिक रंग
चित्रकार	:	एम. एफ. हुसैन
काल	:	2004 ईसवी
संग्रह	:	निजी संग्रह
माप	:	40.2 × 54.8 से.मी.

सामान्य विवरण

हुसैन भारतीय समकालीन कला के प्रतीक थे और उनके चित्र स्वयं ही अपनी कहानी कहते हैं। उनके चित्रों में भारतीय मिथकों एवं आधुनिक जीवन का समन्वय था। उन्होंने कड़े परिश्रम और आत्मसंयम से अपनी स्वतंत्र निजी शैली विकसित की। उन्होंने सरल, गाढ़ी रेखाओं और चमकीले रंगों का प्रयोग किया।

इस चित्र में दो सिरे वाले विभिन्न रंगों से भरपूर गणेश चित्रित किए गए हैं। प्रत्येक मुख में एक दाँत है। गणेश एक हाथ में वाद्ययंत्र बजा रहे हैं तथा दूसरे हाथ से पीले रंग का मोदक- संभवत: चंद्र उछाल रहे हैं। उनकी एक भुजा पीले रंग से और दूसरी लाल रंग से रंगी गई है। बहुरंगी पृष्ठभूमि में लाल, भूरा, सलेटी, पीला, हरा एवं काला रंग लगाया गया है। अधिकतम विरोधाभास उत्पन्न करने हेतु गणेश की धोती का रंग सफेद है और भारतीय ढंग से चित्रित किया गया है। वाचाल गहरे रंगों का प्रयोग एवं बेधड़क तूलिका संघात हुसैन की चित्रण विशेषताएँ हैं, जो उन्हें अन्य चित्रकारों से अलग करती हैं। चित्र के अग्रभाग एवं पृष्ठभाग की चित्रण-शैली को देखकर प्रसिद्ध यूरोपीय चित्रकार पॉल सीजेन के चित्रों की याद आती है।

पाठगत प्रश्न 11.5

1. 'नाद स्वरम् गणेश्यम्' चित्र के चित्रण का माध्यम क्या है?
2. 'नाद स्वरम् गणेश्यम्' में चित्रित वाद्ययंत्र का नाम लिखिए।
3. 'नाद स्वरम् गणेश्यम्' में प्रयुक्त किए गए पाँच रंगों के नाम लिखिए।

11.6 के. के. हेब्बार

प्रिय शिक्षार्थी! अब हम समकालीन कलाकारों में से एक के.के. हैब्बार के योगदान के बारे में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

अपने आरंभिक वर्षों में, जिसे उनका केरल काल भी कहा जाता है, उन्होंने केरल राज्य के भूदृश्य बड़ी संख्या में चित्रित किए। उस समय हेब्बार प्रसिद्ध यूरोपियन चित्रकार पॉल गोगा एवं भारतीय चित्रकार अमृता शेरगिल से अत्यधिक प्रभावित थे। हेब्बार की चित्रण-शैली प्रभाववादी एवं अभिव्यंजनावादी तकनीक का अद्भुत सम्मिश्रण है। उनकी सामाजिक गहरी प्रतिबद्धता ने उन्हें गरीबी, भूखमरी एवं विनाश जैसे विषयों पर चित्रण करने के लिए प्रेरित किया। उनके बनाए चित्रों का एक अन्य रूप भी है, जिनमें उन्होंने नृत्य-प्रदर्शनों में सौंदर्य का चित्रण किया है। चित्र उन्होंने भारतीय शास्त्रीय नृत्य कत्थक से प्रभावित होकर चित्रांकित किए। एक चित्रकार के रूप में अपने समूचे जीवन में उन्होंने प्रयोगात्मक रवैया बनाए रखा और प्रयोगात्मक चित्र बनाने के कभी हिचकिचाए नहीं। उन्होंने अपनी चित्र-शैली को समृद्ध करने हेतु देश में अनेक दौरे किए। उन्होंने केरल एवं महाराष्ट्र

की प्राचीन एवं ऐतिहासिक गुफाओं के दर्शन भी किए। इसी यात्रा के दौरान बनाए एक रेखाचित्र पर उन्हें 'बाम्बे ऑर्ट सोसायटी' द्वारा गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया था।

कटिंगेरी कृष्णा हेब्बार का जन्म कर्नाटक के उडुपी जिले के कटिंगेरी गाँव में सन् 1911 में हुआ था। पश्चिमी ढंग की शिक्षा एवं प्रशिक्षण पाने के बावजूद हेब्बार की चित्रण-शैली भारतीय ग्रामीण लोककला से गहरा जुड़ाव रखती है। मैसूर में कुछ समय से आरंभिक प्रशिक्षण के उपरांत वे मुंबई के सर जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्टस् में अध्ययन हेतु चले गए। उन्होंने चित्रकारी में अपना जीवन सर जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्टस में कला अध्यापक के रूप मे कार्य किया। वे सन् 1940 और 1945 के मध्य में वहीं रहे। इसके बाद के वे पेरिस की जूलियन अकादमी में कला के अध्ययन हेतु यूरोप चले गए।

अपने कार्यकाल के दौरान हेब्बार को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें पद्मश्री, पद्मभूषण एवं महाराष्ट्र शासन द्वारा दिया गया 'गौरव पुरस्कार' सम्मिलित हैं। 85 वर्ष की आयु में हेब्बार का निधन सन् 1996 में हुआ।

चित्र 11.6: शीर्षकविहीन

शीर्षक	:	**शीर्षकविहीन**
माध्यम	:	कागज पर जलरंग
चित्रकार	:	के. के. हेब्बार
काल	:	1938 ईसवीं
संग्रह	:	निजी संग्रह

सामान्य विवरण

के. के. हेब्बार उन चित्रकारों में से है जिनके चित्रों में भारतीय जीवन को दर्शाया गया है। उन्होंने अपने चित्रों में मानव-आकृतियों को भारतीय रूप-रंग से सजाया है।

इस चित्र में उन्होंने केरल के तटीय नगर का चित्रण किया है। अग्रभाग में मछुआरे एवं उनकी नावें दर्शाई गई हैं तथा उनकी झोपड़ियाँ पृष्ठभूमि में चित्रित की गई हैं। सुबह की गतिविधियों की सरगर्मियाँ चित्र में दिखाई दे रहीं हैं। एक सही-सही तटीय दृश्य दर्शाने हेतु धूसर पीला, कत्थई, नारंगी, नीले और सलेटी रंग का प्रयोग बहुत की बुद्धिमता से किया गया है। तूलिका की गहरी छटाओं के मध्य जलरंगों की पारदर्शिता देखते ही बनती है।

पाठगत प्रश्न 11.6

1. उन भारतीय एवं विदेशी कलाकारों के नाम लिखिए जिन्होंने हेब्बार को सर्वाधिक प्रभावित किया।
2. हेब्बार का निधन किस आयु में हुआ?
3. हेब्बार ने शीर्षकविहीन चित्र में किन-किन रंगों का प्रयोग किया?

आपने क्या सीखा

समकालीन कला एवं कलाकार

कला		कलाकार
सुभद्राहरण	⟶	राजा रवि वर्मा, केरल
यात्रा का अंत	⟶	अवनीन्द्रनाथ टैगोर, पश्चिम बंगाल
माँ और बच्चा	⟶	जामिनी रॉय, पश्चिम बंगाल
दुल्हन काश्रृंगार	⟶	अमृता शेरगिल, हंगेरी
नंद स्वरम् गणेश्यम्	⟶	एम.एफ. हुसैन, महाराष्ट्र
शीर्षकहीन	⟶	के.के. हेब्बार, केरल

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी :

- अपनी कलाकृति में वॉश तकनीक और शैली का उपयोग करते हैं।
- चित्रकला के क्षेत्र में नई पद्धति और माध्यम का प्रयोग करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. प्रसिद्ध भारतीय समकालीन चित्रकारों के नाम लिखिए।
2. राज रवि वर्मा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' अधिक लोकप्रिय क्यों हुआ?
4. जामिनी राय की चित्रण-शैली के बारे में लिखिए।
5. अमृता शेरगिल के जीवन वृत्तांत पर संक्षप में लिखिए।
6. एम.एफ. हुसैन को 'पिकासी ऑफ़ इंडिया' के नाम से क्यों जाना गया?
7. उस पेरिस अकादमी का नाम लिखिए जहाँ हेब्बार ने कला की उच्च शिक्षा प्राप्त की।
8. भारत सरकार द्वारा हेब्बार को दिया गया सर्वोच्च पुरस्कार कौन सा था?
9. 'नाद स्वरम गणेश्यम' चित्रकला किससे प्रभावित है?
10. गणेशजी चित्रकला की भुजाओं के रंग लिखिए।
11. 'नाद स्वरम् गणेश्यम' पेंटिंग का आकार क्या है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. कलिमनूर, जो कि दक्षिणी केरल राज्य का छोटा-सा नगर है।
2. वे अपनी सफलता का श्रेय अपने विधिवत प्रशिक्षण, पहले तंजावुर की पारंपरिक चित्रकला को और बाद में यूरोपीयन कला को देते थे।
3. महाभारत
4. संन्यासी

11.2

1. जोरासको (कोलकाता)
2. जलरंग

11.3

1. बंगाल के बांकुरा जिले में बेल्लातोर गाँव में।
2. टेंपरा
3. जलरंग

11.4

1. हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट
2. उनके बचपन के आरंभिक हंगरी के गाँव में बीते।
3. 'हिल वूमेन', 'वूमेन एट वाच' एवं 'स्लीप'।
4. कैनवास पर तैलरंग

11.5

1. कैनवास पर एक्रायलिक रंग
2. नाद
3. लाल, कत्थई सलेटी, पीला, हरा एवं काला

11.6

1. पाल गोगाँ एवं अमृता शेरगिल
2. 85 वर्ष
3. पीला, कत्थई, नारंगी, नीला एवं सलेटी

शब्दकोश

समसामयिक/समकालीन	: वर्तमान समय में
पुनर्उत्थान वादी	: पारंपरिक मूल्यों की पुनः स्थापना के पक्षधर
निसर्ग	: प्रकृति
विरासत	: पूर्वज से प्राप्त
रूपक	: साहित्यिक प्रतीक
पशुचर्म	: पशु की खाल
लजजावश	: शर्म क कारण
परिलक्षित	: दिखाई देना
अवसाद	: दुख
अभिव्यंजनावाद	: यूरोप का एक कला आंदोलन
चित्र भाषा	: चित्र द्वारा अपनी बात कहने का ढंग

मॉड्यूल - 3

रेखांकन और चित्रकला में उपयोग की जाने वाली विधि और सामग्री

12. भारतीय कला में फ्रैस्को एवं टेंपरा

13. सूखे माध्यमों से चित्रण एवं रेखांकन

14. भित्तिचित्र एवं छापाचित्र